http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2025) वर्ष 5, अंक 6, 24-27

Article ID:662

प्राकृतिक खेती आज की जरूरत: स्वस्थ धरती सुरक्षित भोजन और समृद्ध किसान की ओर एक सार्थक कदम

रूपेंद्र कुमार[1]
मम्ता कम्बोज [2], अनुपम[3]

[1]कृषि विज्ञान केन्द्र, रोहतक
[2]कपास अनुभाग
आनुवंशिकी और पादप प्रजनन
[3]पीएच.डी. शोधकर्ता
सस्य विज्ञान विभाग
चौधरी चरण सिंह हरियाणा
कृषि विश्वविद्यालय , हिसार

*अनुरूपी लेखक

रूपेंद्र कुमार*

परिचय

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ की अर्थव्यवस्था, संस्कृति और सामाजिक जीवन में खेती का विशेष स्थान है। देश की बड़ी आबादी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। किसान दिन-रात मेहनत करके हमारे लिए अन्न, फल, सब्जियाँ और अन्य आवश्यक खाद्य पदार्थ पैदा करता है। लेकिन आज खेती के सामने अनेक चुनौतियाँ खड़ी हैं। मिट्टी की घटती उर्वरता, भूजल का गिरता स्तर, रासायनिक उर्वरकों पर बढ़ती निर्भरता, खेती की बढ़ती लागत और जलवायु परिवर्तन ने कृषि व्यवस्था को प्रभावित किया है। ऐसे समय में प्राकृतिक खेती केवल एक कृषि पद्धति नहीं, बल्कि धरती, पर्यावरण और मानव जीवन को बचाने का एक महत्वपूर्ण विकल्प बनकर उभर रही है। यह हमें अपनी पारंपरिक कृषि समझ को आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान के साथ जोड़ने की प्रेरणा देती है। प्राकृतिक खेती का उद्देश्य केवल फसल उगाना नहीं, बल्कि मिट्टी की सेहत सुधारना, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना और किसानों को आर्थिक रूप से मजबूत बनाना भी है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम खेती को केवल अधिक उत्पादन प्राप्त करने का साधन न मानें, बल्कि उसे प्रकृति और मनुष्य के बीच संतुलन बनाए रखने वाली जीवन-पद्धति के रूप में भी देखें।

प्राकृतिक खेती क्या है

प्राकृतिक खेती ऐसी कृषि पद्धति है, जिसमें सिंथेटिक रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों पर निर्भरता से बचते हुए प्राकृतिक संसाधनों, स्थानीय जैविक पदार्थों, लाभकारी सूक्ष्मजीवों तथा कृषि-पारिस्थितिकी के सिद्धांतों का उपयोग किया जाता है। इसमें मिट्टी को जीवंत बनाए रखने, पानी का संरक्षण करने, जैव विविधता बढ़ाने और खेत में उपलब्ध संसाधनों का अधिकतम उपयोग करने पर जोर दिया जाता है। इस पद्धति में फसल अवशेषों का उपयोग, खेत में आच्छादन यानी मल्चिंग, मिश्रित खेती, फसल चक्र, स्थानीय बीजों का उचित चयन, पशुपालन और प्राकृतिक तरीकों से कीट प्रबंधन जैसी गतिविधियाँ महत्वपूर्ण हैं। गोबर, गोमूत्र और विभिन्न पौधों से तैयार किए गए घोलों का उपयोग भी स्थानीय परिस्थितियों और कृषि विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार किया जा सकता है। प्राकृतिक खेती की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें खेत को केवल फसल पैदा करने वाली भूमि नहीं, बल्कि मिट्टी, पानी, पौधों, कीटों, पक्षियों और सूक्ष्मजीवों से मिलकर बना एक जीवंत पारिस्थितिकी तंत्र माना जाता है। नीति आयोग और कृषि संबंधी संस्थाएँ भी प्राकृतिक खेती को टिकाऊ कृषि तथा पर्यावरण संरक्षण के महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में प्रोत्साहित करती हैं।

रासायनिक खेती की चुनौतियाँ और प्राकृतिक खेती की आवश्यकता

हरित क्रांति ने भारत को खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्नत बीजों, सिंचाई और उर्वरकों के प्रयोग से कई फसलों का उत्पादन बढ़ा। लेकिन कुछ क्षेत्रों में लंबे समय तक रासायनिक आदानों के असंतुलित उपयोग और एक ही फसल को बार-बार उगाने के कारण मिट्टी की गुणवत्ता, जल संसाधनों और कृषि जैव विविधता पर दबाव बढ़ा है। रासायनिक उर्वरकों का आवश्यकता से अधिक या असंतुलित प्रयोग मिट्टी के पोषक तत्वों के संतुलन को प्रभावित कर सकता है। कीटनाशकों का अनुचित उपयोग लाभकारी कीटों और अन्य जीवों को नुकसान पहुँचा सकता है। खेतों से बहकर जाने वाले पोषक तत्व जल स्रोतों को भी प्रदूषित कर सकते हैं। दूसरी ओर खेती में बीज, खाद, कीटनाशक, डीजल और बिजली पर बढ़ता खर्च किसानों की आर्थिक स्थिति पर दबाव डालता है। यदि उत्पादन में वृद्धि के साथ लागत भी लगातार बढ़ती रहे, तो किसान को अपेक्षित लाभ नहीं मिल पाता। प्राकृतिक खेती इन समस्याओं को कम करने की दिशा में एक उपयोगी विकल्प प्रस्तुत करती है। इसका उद्देश्य बाहरी कृषि आदानों पर निर्भरता घटाना, मिट्टी में जैविक पदार्थों को बढ़ावा देना और स्थानीय संसाधनों का बेहतर उपयोग करना है। हालाँकि, इसके परिणाम मिट्टी, जलवायु, फसल, प्रशिक्षण और प्रबंधन के अनुसार अलग-अलग हो सकते हैं।

प्राकृतिक खेती के प्रमुख लाभ

1. मिट्टी की उर्वरता और सेहत में सुधार

मिट्टी केवल धूल या जमीन का एक टुकड़ा नहीं, बल्कि असंख्य सूक्ष्मजीवों, केंचुओं और अन्य जीवों का घर है। स्वस्थ मिट्टी ही स्वस्थ पौधों और अच्छी कृषि व्यवस्था का आधार है। प्राकृतिक खेती में फसल अवशेषों का पुनः उपयोग, जैविक पदार्थों का समावेश, फसल चक्र और खेत को ढककर रखने जैसी विधियाँ मिट्टी की संरचना सुधारने में सहायक हो सकती हैं। इससे मिट्टी में नमी बनाए रखने और पोषक तत्वों के प्राकृतिक चक्र को मजबूत करने में मदद मिलती है।

2. खेती की लागत कम करने की संभावना

आज किसान की सबसे बड़ी चिंताओं में से एक खेती पर बढ़ता खर्च है। प्राकृतिक खेती में खेत पर उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करके बाहर से खरीदे जाने वाले कुछ उर्वरकों और कीटनाशकों की आवश्यकता कम की जा सकती है। गोबर, फसल अवशेष, पत्तियाँ और अन्य स्थानीय संसाधनों का उचित उपयोग इस दिशा में मददगार है। इससे किसान की नकद लागत कम होने की संभावना रहती है। लेकिन शुरुआत में प्रशिक्षण, श्रम, उपकरण, संक्रमण काल और बाजार तक पहुँच जैसी चुनौतियों को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

3. जल संरक्षण

जल कृषि का प्राण है। वर्षा की अनियमितता और भूजल के लगातार दोहन के कारण अनेक क्षेत्रों में सिंचाई एक बड़ी चुनौती बन गई है। प्राकृतिक खेती में मल्चिंग, मिट्टी में जैविक पदार्थों का संरक्षण, वर्षा जल संचयन और उपयुक्त फसल चयन जैसी विधियाँ पानी के बेहतर उपयोग में सहायता कर सकती हैं। खेत को फसल अवशेषों से ढकने पर मिट्टी से नमी का नुकसान कम हो सकता है। इसके साथ ही ड्रिप सिंचाई, स्प्रिंकलर और स्थानीय जलवायु के अनुकूल फसलों का चयन अपनाया जाए, तो जल संरक्षण के प्रयास और प्रभावी बन सकते हैं।

4. पर्यावरण और जैव विविधता का संरक्षण

प्रकृति में प्रत्येक जीव की अपनी भूमिका होती है। मधुमक्खियाँ परागण में मदद करती हैं, केंचुए मिट्टी की संरचना सुधारते हैं और अनेक लाभकारी कीट फसलों को नुकसान पहुँचाने वाले कीटों को नियंत्रित करते हैं।प्राकृतिक खेती में विविध फसलों, पेड़ों, लाभकारी जीवों और स्थानीय वनस्पतियों को प्रोत्साहित किया जाता है। इससे खेत का पारिस्थितिकी तंत्र अधिक संतुलित बनाने में सहायता

मिल सकती है। रासायनिक कीटनाशकों पर निर्भरता कम करने, फसल अवशेषों का सही उपयोग करने और मिट्टी को ढककर रखने से पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा मिलता है।

5. किसान की आर्थिक मजबूती

किसान की समृद्धि केवल अधिक पैदावार पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उत्पादन लागत, बाजार मूल्य और फसल के जोखिम पर भी निर्भर करती है। प्राकृतिक खेती में लागत कम करने, मिश्रित फसलें उगाने और पशुपालन जैसी गतिविधियों को जोड़ने से आय के विविध स्रोत विकसित किए जा सकते हैं। यदि किसान अनाज के साथ दालें, तिलहन, सब्जियाँ, फल और अन्य स्थानीय माँग वाली फसलें भी उगाता है, तो उसे एक ही फसल पर निर्भर रहने की आवश्यकता कम हो सकती है। हालाँकि, फसल विविधीकरण का निर्णय मिट्टी, पानी, बाजार और परिवार की जरूरतों के अनुसार लेना चाहिए।

6. सुरक्षित और गुणवत्तापूर्ण भोजन

स्वस्थ जीवन के लिए पौष्टिक और सुरक्षित भोजन आवश्यक है। कृषि में कीटनाशकों और उर्वरकों का अनुचित प्रयोग खाद्य उत्पादन तथा पर्यावरण से जुड़े जोखिम पैदा कर सकता है।प्राकृतिक खेती का उद्देश्य रासायनिक आदानों पर निर्भरता घटाकर कृषि उत्पादन को अधिक टिकाऊ बनाना है। फिर भी यह समझना जरूरी है कि किसी उत्पाद की सुरक्षा केवल खेती की पद्धति के नाम से सुनिश्चित नहीं होती। स्वच्छ पानी, उचित भंडारण, खाद्य स्वच्छता और आवश्यक गुणवत्ता जाँच भी महत्वपूर्ण हैं।

प्राकृतिक खेती की प्रमुख विधियाँ

प्राकृतिक खेती को सफल बनाने के लिए केवल रासायनिक खाद का प्रयोग बंद कर देना पर्याप्त नहीं है। इसके लिए खेत की स्थिति को समझना और उपयुक्त कृषि तकनीकों को अपनाना जरूरी है।

पहली विधि — मल्चिंग: खेत में फसल अवशेष, सूखी पत्तियाँ या उपयुक्त जैविक सामग्री बिछाकर मिट्टी को ढकना मल्चिंग कहलाता है। इससे नमी संरक्षण और मिट्टी की सुरक्षा में मदद मिल सकती है।

दूसरी विधि — मिश्रित खेती और फसल चक्र: एक खेत में उपयुक्त फसलों को साथ उगाना तथा अलग-अलग मौसमों में फसल बदलना मिट्टी के पोषक तत्वों के बेहतर प्रबंधन और जोखिम कम करने में सहायक हो सकता है।

तीसरी विधि — प्राकृतिक जैविक घोल: गोबर, गोमूत्र और स्थानीय पौधों से तैयार कुछ पारंपरिक घोलों का उपयोग प्राकृतिक खेती में किया जाता है। इनका चयन, तैयारी और प्रयोग स्थानीय कृषि विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में करना चाहिए।

चौथी विधि — जैविक कीट प्रबंधन: नीम आधारित उत्पादों, लाभकारी जीवों, फेरोमोन ट्रैप और खेत की नियमित निगरानी से कीट नियंत्रण में सहायता मिल सकती है। समस्या की पहचान किए बिना किसी भी घोल का अंधाधुंध प्रयोग उचित नहीं है।

पाँचवीं विधि — पशुपालन और कृषि का समन्वय: पशुओं से प्राप्त गोबर तथा अन्य उपयोगी संसाधनों का सही प्रबंधन खेती को अधिक चक्रीय और संसाधन-कुशल बना सकता है। इन विधियों का चयन स्थानीय मिट्टी, जलवायु, फसल और उपलब्ध संसाधनों के अनुसार किया जाना चाहिए।

प्राकृतिक खेती अपनाने में चुनौतियाँ

प्राकृतिक खेती के अनेक संभावित लाभ हैं, लेकिन इसे अपनाने में कुछ व्यावहारिक कठिनाइयाँ भी हैं।

1. पहली चुनौती किसानों के बीच वैज्ञानिक जानकारी और उचित प्रशिक्षण की कमी है।
2. दूसरी चुनौती यह है कि कुछ परिस्थितियों में शुरुआती वर्षों के दौरान उत्पादन में उतार-चढ़ाव हो सकता है।

3. तीसरी चुनौती बाजार से जुड़ी है। यदि किसान प्राकृतिक तरीके से उत्पादन करता है, लेकिन उसे अपनी उपज का उचित मूल्य या अलग बाजार नहीं मिलता, तो उसकी आर्थिक प्रेरणा कम हो सकती है।
4. चौथी चुनौती प्रमाणन, भंडारण, प्रसंस्करण और उपभोक्ताओं के बीच भरोसा पैदा करने की है।

इन समस्याओं का समाधान किसानों को कृषि विज्ञान केंद्रों, कृषि विश्वविद्यालयों और प्रशिक्षित कृषि विशेषज्ञों से जोड़कर किया जा सकता है। गाँवों में प्रदर्शन खेत विकसित किए जाएँ, जहाँ किसान स्वयं प्राकृतिक खेती की विधियाँ सीख सकें। साथ ही, उत्पादों की गुणवत्ता जाँच, उचित विपणन और किसान उत्पादक संगठनों को मजबूत करने पर भी ध्यान देना चाहिए।

सरकार, वैज्ञानिकों और समाज की भूमिका

प्राकृतिक खेती को व्यापक स्तर पर सफल बनाने के लिए किसानों के व्यक्तिगत प्रयासों के साथ संस्थागत सहयोग भी आवश्यक है। केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन को बढ़ावा दिया है, जिसका उद्देश्य प्राकृतिक खेती के लिए प्रशिक्षण, संसाधन, किसान समूहों और बाजार संबंधी सहायता को मजबूत करना है। कृषि वैज्ञानिकों की जिम्मेदारी है कि वे प्राकृतिक खेती की विभिन्न विधियों का स्थानीय परिस्थितियों में परीक्षण करें और किसानों को प्रमाण-आधारित मार्गदर्शन दें। किसानों को भी अपने अनुभवों का रिकॉर्ड रखना चाहिए, जिसमें उत्पादन, लागत, पानी की खपत और फसल की गुणवत्ता शामिल हो। सरकार को स्थानीय बाजारों, भंडारण सुविधाओं और मूल्य संवर्धन के अवसरों को बढ़ावा देना चाहिए। स्कूलों, महाविद्यालयों और सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से लोगों को मिट्टी संरक्षण तथा जिम्मेदार खाद्य उपभोग के प्रति जागरूक किया जा सकता है। उपभोक्ता भी स्थानीय किसानों से उपज खरीदकर और भोजन की बर्बादी कम करके इस प्रयास में योगदान दे सकते हैं।

भविष्य की राह: बदलाव की शुरुआत अपने खेत से

प्राकृतिक खेती को सफल बनाने के लिए हर किसान को एक साथ पूरी खेती की पद्धति बदलने के लिए बाध्य नहीं किया जाना चाहिए। किसान अपनी जमीन के एक छोटे हिस्से से शुरुआत कर सकता है। वह उस हिस्से पर फसल की लागत, उत्पादन, पानी की खपत और मिट्टी की स्थिति का रिकॉर्ड रखे। फिर परिणामों की तुलना अपनी पारंपरिक खेती से करे। यदि परिणाम अनुकूल हों, तो धीरे-धीरे क्षेत्र बढ़ाया जा सकता है। इस प्रक्रिया में मिट्टी की जाँच, उपयुक्त फसल चयन, समय पर सिंचाई और कीट प्रबंधन को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। विशेषकर छोटे किसानों के लिए सामूहिक प्रयास महत्वपूर्ण हैं। गाँव के किसान मिलकर प्रशिक्षण ले सकते हैं, प्राकृतिक कृषि सामग्री तैयार कर सकते हैं और अपनी उपज की सामूहिक बिक्री की व्यवस्था कर सकते हैं। इससे जानकारी साझा करने और बाजार तक पहुँच बनाने में सहायता मिल सकती है। प्राकृतिक खेती का भविष्य केवल खेतों में बदलाव से नहीं, बल्कि हमारी सोच में बदलाव से भी जुड़ा है। हमें उत्पादन की मात्रा के साथ-साथ मिट्टी की सेहत, जल संरक्षण, किसान की आय और आने वाली पीढ़ियों की जरूरतों को भी महत्व देना होगा।